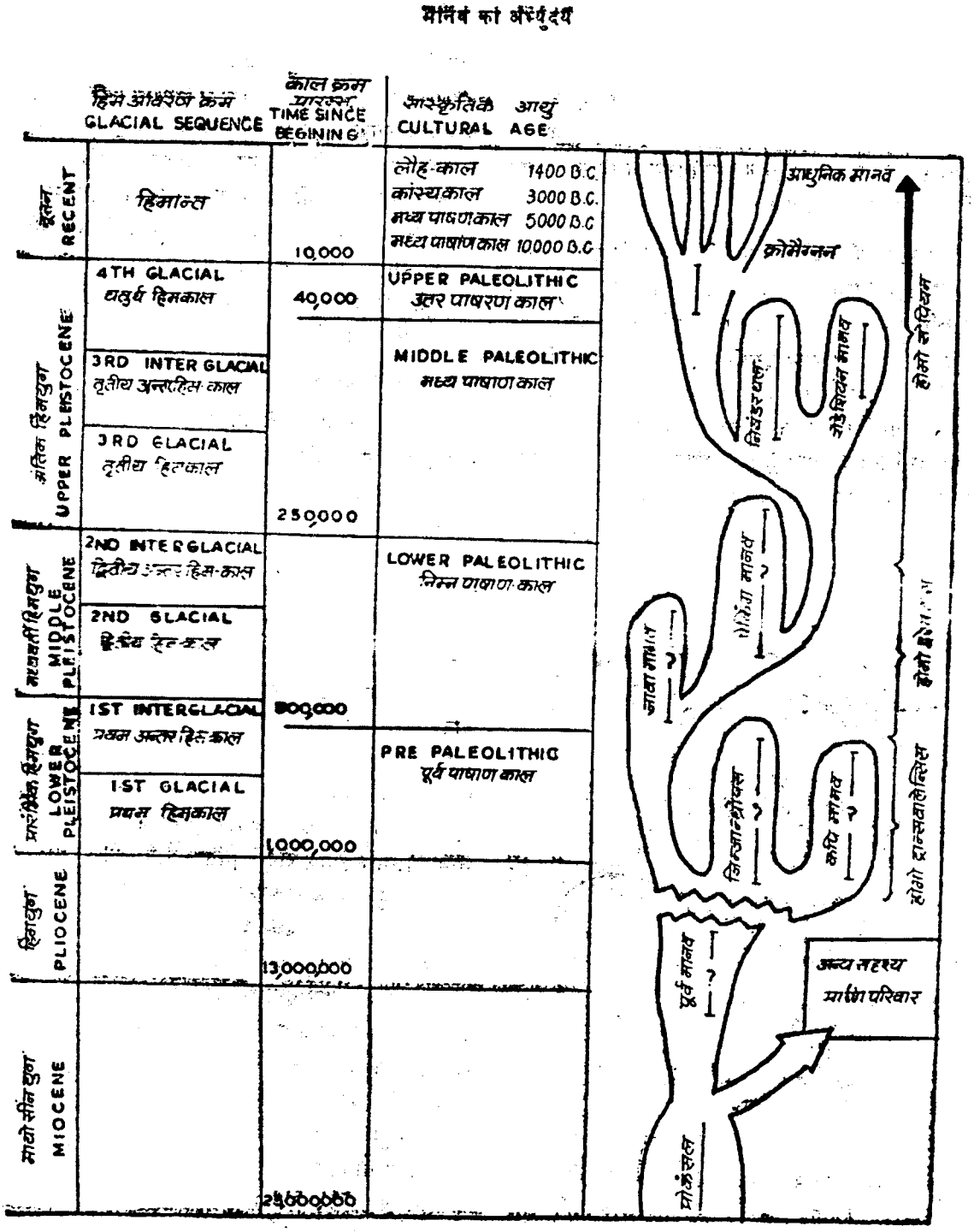

चित्र 2 : 1 – मानव का कालक्रम विकास

2.3 मानव के पूर्वज (Ancestors of Man)

मनुष्य के पूर्वजों के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि सभी प्राइमेट जीव एक ही पूर्वज से उत्पन्न हुए हैं। इनमें कुछ प्राइमेट लंगूर एवं वानरों से मिलते-जुलते होंगे एवं प्राइमेट जीवों का ही एक भाग मानव के रूप में विकसित हुआ।

मनुष्य जैविक विकास की प्रक्रिया में एक अनूठा उत्पाद है। इसका अनूठापन, इसकी सांस्कृतिक विरासत, इसकी सीखने की क्षमता, परिस्थितियों में अपने को ढ़ालने की क्षमता आदि इसकी ऐसी विशेषतायें हैं जिनसे उसने अपने जैविक विकास की प्रक्रिया का भी परिमार्जन कर लिया है। इस तरह वह पृथ्वी के अन्य जीवों से बिल्कुल भिन्न हो गया है। आधुनिक मान्यताओं के अनुसार जिसका आधार डार्विन द्वारा प्रतिपादित 'विकासवाद' है। सभी का विकास इस पृथ्वी तल पर एक क्रमबद्ध प्राकृतिक नियम के तहत हुआ है। मानव भी उसी जीवों के साथ विकसित होकर उच्चस्थ वर्ग का जीव बन पाया है। सम्भवतः उसके पूर्वज आज के मानव से भिन्न होंगे। क्रमिक विकास की श्रृखंला में मानव के पूर्वज बन्दर परिवार के जीव थे जो विकसित होकर धीरे धीरे मानव और फिर मेधावी मानव बने और अन्ततः मानव का विकास हो सका। मानव पूर्वज की कापालिक आकृति चित्र संख्या 2.2 में देखें।

इस चित्र को देखते से स्पष्ट होता है कि मानव पूर्वज की कापालिक आकृति में क्रमशः विकास हुआ है। मानव पूर्वजों की खेपड़ियों की रचना एवं, आस्ट्रेलोपिथकस, होमोइरेक्टस एवं होमोसेपियन्स।

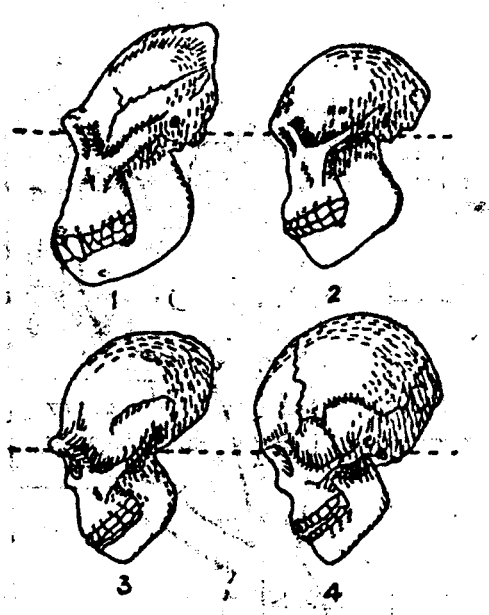

चित्र 4.2, मानव के पूर्वजों की खोपड़ियों की रचना
1. एप (Apc) 2. आस्ट्रेलोपिथकस
3. होमो इरेक्टस 4. होमोसेपियन्स

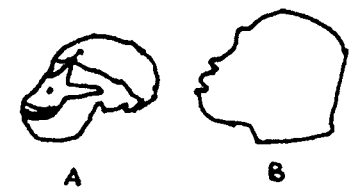

A. आधा मानव की खोपड़ी
B. उसी के आधार पर पुनर्कल्पित सिर का स्वरूप

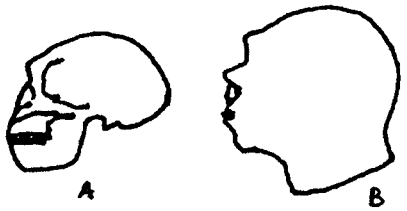

A. हेडिलबर्ग मानव की खोपड़ी
B. उसी का पुनर्कल्पित सिर का स्वरूप

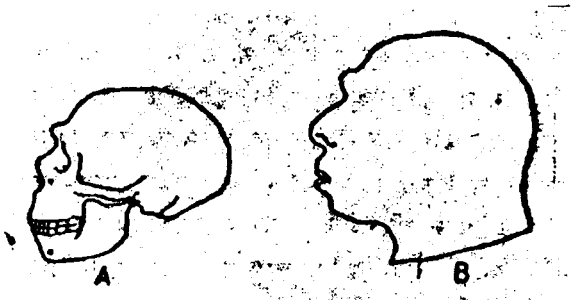

चित्र 4.6 A–नियंडरथल मानव की खोपड़ी
B–उसी का पुनर्कल्पित सिर

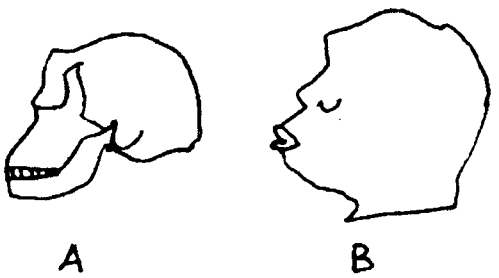

A. रोडेशियन मानव की खोपड़ी
B. उसी का पुर्नकल्पित सिर का स्वरूप

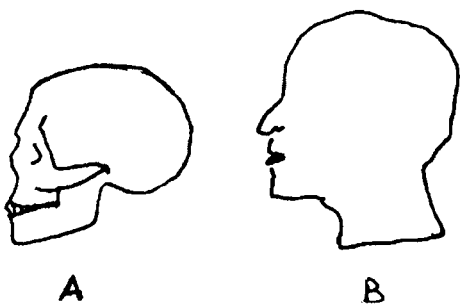

A क्रोमैग्नन मानव की खोपड़ी
B. उसी का पुर्नकल्पित सिर का स्वरूप

2.4 मानव का विकास (Development of Man)

डार्विन एवं हक्सले के अनुसार शरीर रचना तथा मस्तिष्क की दृष्टि से मानव, प्राणी जगत का जीव हैं कई लाख वर्ष पूर्व यह जाति अन्य मानवीय वानरों की एक शाखा पर पुष्पित हुई तथा अपने विकास के कुछ समय पश्चात ही इसने अपने बुद्धि एवं अविष्कार शक्ति से अपने पर्यावरणमें महत्वपूर्ण परिवर्तन करना आरम्भ कर दिया।

यह निश्चित रूप से कहना कठिन है कि सर्वप्रथम मानव कहॉ पैदा हुआ, औरयही से अन्य क्षेत्रों में फैला। पाश्चात्य विद्धानों के अनुसार सर्वप्रथ्म मानवाकार कपि अफ्रिका में पैदा हुआ औरयहीं से अन्य क्षेत्रों में फैला। नवीनतम शोधों से पता चला है कि आदि मानव की उत्पति का क्षेत्र भारतवर्ष रहा है।

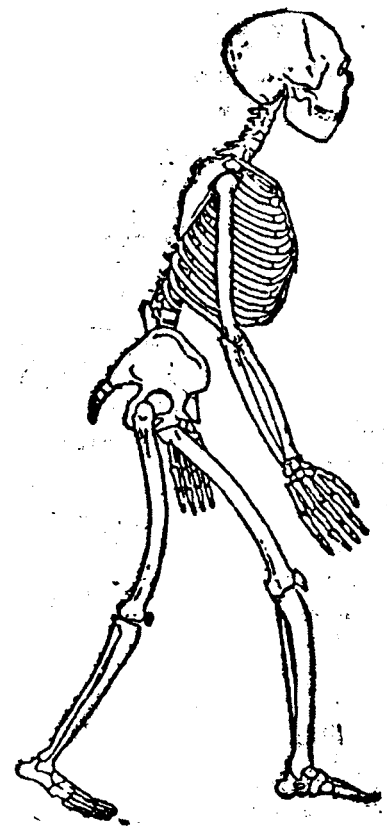

चित्र 1.3 नियंडरथल-मानव का कल्पित कंकाल

2.5 मानव विकास के चरण (Stages Develompent of Man)

प्राणियों में खड़े होने की क्षमता, बातचीत का गुणउपकरणों का प्रयोग तथा मस्तिष्क का विकास मानवहोने के प्रमाण माने जाते है। इस आधार पर मनुष्य के विकास के चारप्रमुख चरण माने जा सकते है।

पूर्व मानव (Pre -Man)

प्रागैतिहासिक मानव (Pre- Historic Man)

वास्तविक मानव (True Man)

आधुनिक मानव (Modern Man)

(1) पूर्व मानव (Pre- Man) :-

यह मानव समुदाय का प्रथम चरण है। इसे प्रोकंसल के नाम से भी जाना जाता है। यह कपि एंव मानव के बीच का प्रतीत होता है। इसका माथा गोलाकार था जो मनुष्य की तरह है, किन्तु केनाइन दॉत बंदर के दाँत की तरह लम्बे थे। यह दाई करोड़ वर्ष पूर्व मानव विकासका काल है जब ऐसे जीव धरातल पर विचरण कर रहे थे।

(2) प्रागैतिहासिक मान (Pre- Historic Man) :-

यह मानव विकास का दूसरा चरण है। प्रागैतिहासिक मानव के विकास के तीन चरण माने गये है।

मानवाकार कपि,

कपि मानव एवं

विकसित मस्तिष्क युक्त मानव।

(1) पूर्व मानव (Man Ape) :- मानवाकार कपि के भी पॉच उपचरण बताये गये, जिनकी अपनी अलग-अलग विशिष्टता थी।

(A) जिनेजैन्थ्रोपस बोसाई (Zinianthropus Boisei) :-

यह जीवाश्म सादे सत्रह लाख वर्ष पुराना था, जिनकीकाालीय क्षमता बहुत कम 600 मि०ली० थी। दॉत शकाहारियों के तरह थे। ये पेड़ से उतर कर जमीन पर रहने लगे थे, तथा काठ, कंकड़ के औजारों का प्रयोग करते थे।

(B) आस्ट्रेलोपिथक्स अफ्रीकन्स (Australopithecus-Africans) :-

इस जीवाश्म की प्राप्ति अफ्रीका में टॉग नामक चूना पत्थर की गुफा से हुई थी। अत: इसे 'टांग शिशु' के नाम से भी जाना जाता हैं इस जीवाश्म के कपाल के दॉत मनुष्य की तरह थे। ये छोटे-छोटे जन्तुओ को खते थे तथा कंकड़ के औजार बनाते थे।

(C) आस्ट्रेलोपिथकस ट्रांसवैलेनशिस (Australopithecus Transvalensis) :-

इस जीवाश्म के कपाल की विशेषताएँ टॉग शिशु के कपाल के सदृश ही थी।

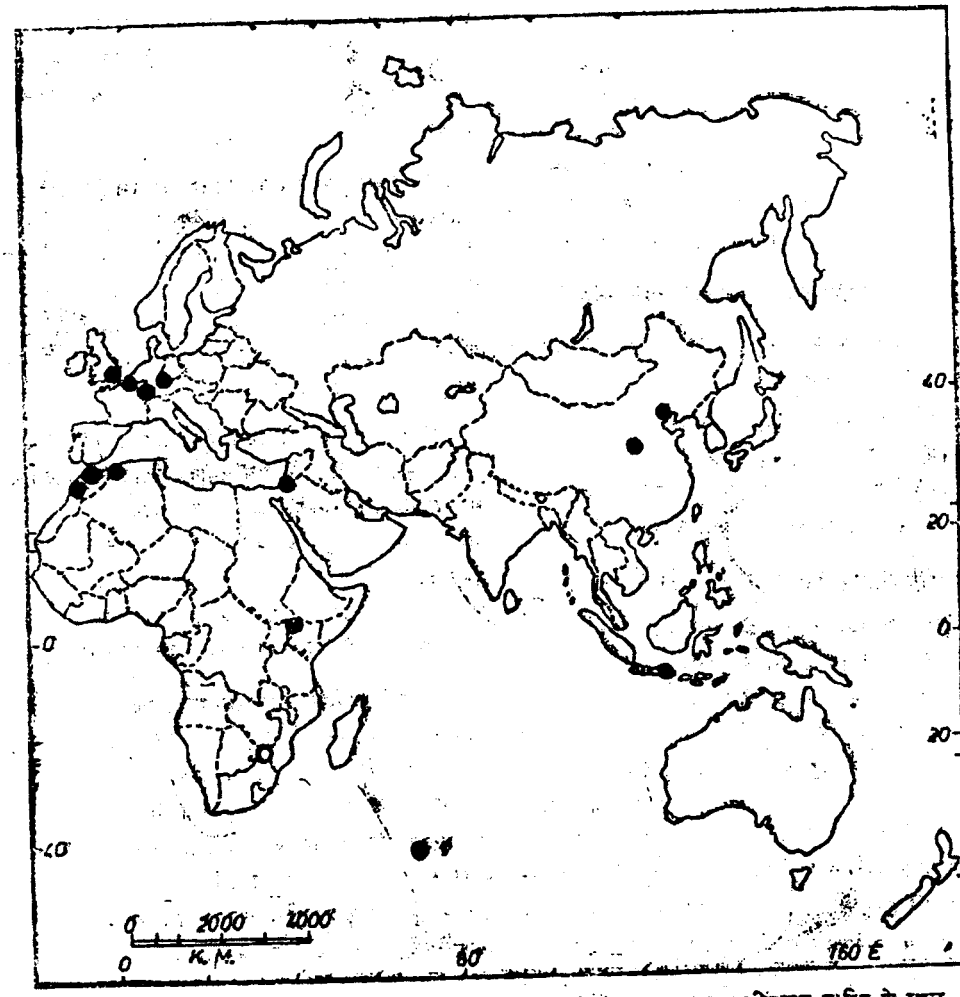

चित्र 4.1 आदि मानव के अवशेष प्राप्ति के प्रमुख स्थल ● 1—प्रमुख मानव जीवाश्म प्राप्ति के स्थल

(D) पेरन्थ्रोपस रोबस्टस (Paranthropus Robustus) :-

इस जीवाश्म का विन्यास मनुष्य के दाँतों की तरह था। केनाइन दाँत छोटे थे। इनका समय प्लायासीन या प्लीस्टोसीन के आस-पास बतलाया गया है।

(1) प्लीजेन्थ्रोपस ट्रांसवेलिनसिस (Pleisanthropus Transvalensis) :-

इसका ऊपरी जबड़ा छोटा तथा चिपन्जी के समान था। इनकी कपालीय क्षमता 650 मि०ली० थी। इसके साथ पेलविस भी अवशेष रूप में मिला जो यह सिद्ध करता है कि यह मानव कपि खड़े होकर चलता था।

जावा मानव (Java-Man) :-

इसकी खोज जावाद्वी में सोलो नदी के पूर्व स्थित ट्रिनिल ग्राम में की गई थी, जीवाश्मों में खोपड़ी बहुत छोटी, परन्तु मस्तिष्क धारिता वानर की तुलना में अधिक थी। इस प्राणी को सीधार चलना आता था,

एवं यह दो पैरों से चलता था। अर्नेस्ट हैकेल के मतानुसार जावा मानव के अवशेष मानव एवं बन्दर के मध्य की कड़ी है और इसे वाणीरहित वानर मानव के नाम से पुकारा जाता हैं अनुमान है कि यह मानव सम्पूर्ण एशिया में फैले थे।

पेकिंग मानव (Peking Man) :-

इसकी खोज मानव उत्पति एवं विकास की सबसे महत्वपूर्ण खेज कही जाती है। इसकीखेज पेकिंग (वर्तमान बीजिंग) के 54 किमी० दक्षिण-पश्चिम स्थित चाउकाऊ तिमेन नामक ग्राम में हुई थी। इनके कपालों की यह विशेषता है कि इनमें चपटी खेपड़ी, भौंह के ऊपर हड्डी अधिक बाहर निकली हुई, मस्तिष्क की कठोर हड्डियॉ, जबड़ा एवं दॉत बड़े, ठोड़ी की हड्डी का अभाव है। जावा मानव की अपेक्षा सामने का ललाट अधिक विकसित था। इनके दॉत मुख्यत: वर्तमान मानव के समान थे। पेकिंग मानव के अवशेषमिलने वाले गुफाओं में अनेक सांस्कृतिक तथ्य मिले हैं जो यह सिद्ध करते हैं, कि पेकिंग मानव उपकरणें का प्रयोग करते थें।

(iii) विकसित मस्तिष्क युक्त मानव (Developed Brained Man) :-

यूरोप, एशिया एवं अफ्रिका में पाये गए जीवाश्मों की समानताओं के आधार पर इन्हें नियंडरथलाइट समूह में रखा गया है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित मानव प्रजातियॉ आती है।

हेडिलबर्ग मानव (Heidelberg Man)

नियंडरथल मानव (Neanderthal Man)

सोलो मानव (Solo Man)

रोडेशिया मानव (Rhodesian Man)

(A) हायडेलबर्ग मानव (Heidel berg Man) :-

इस वर्ग के मानव की खेज का स्थल जर्मनी को हेडिलबर्ग नगर था। इसका अस्तित्व लगभग पॉच लाख वर्ष पूर्व माना जाता है। इसे मानव का पूर्वज कहा जाता है।

(B) नियंडरथल मानव (Neanderthal Man) :-

नियंडरथल मानव के अवशेष जर्मनी के नियंडर नदी की घाटी की गुफा से प्राप्त हुई। यह गुफाओं में रहते थे तथा अग्नि का प्रयोग करते थे। इन्हें मानव की श्रृखंला में बुद्धिमान प्राणी के अन्तर्गत रखा जाता है, क्योंकि यह सीधा खड़ा होकर चलता था, इनकी ऊॅचाई लगभग 150 से 165 सेमी० के बीच थी। इनके शवों के पास आभूषण भी प्राप्त हुए है। इनकी कपालिक क्षमता 1550 मिली० थी।

(C) सोलो मानव (Solo Man) :-

इनके अवशेष जावा में सोलो नदी के तट पर प्राप्त हुए थे। आस्ट्रेलिया के आदिवासी इसके वंशज कहे जाते है। इसकी कपालिक क्षमता 1300 मिली० थी।

(D) रोडेशिया मानव (Rhodesian Man) :-

रोडेशिया मानव के अवशेष दक्षिण अफ्रीका में रोडेशिया के ब्रोकेन पहाड़ी से प्राप्त हुआ। रोडेशिया मानव का ललाट गोरिल्ला की तरह पीछे की ओर झुका था। इनका भौंह कटक विशल था तथा कापालिक क्षमता 1300 मिली० थी, दॉत कपि मानव की तरह बड़े थे।

(3) वास्तविक मानव (True Man) :-

इसके अन्तर्गत होमोसेपियन्स आते है। इसमें जीवित प्रजातियों के साथ क्रोमैग्नन जैसी विलुप्त प्रजातियॉ भी आती है।

क्रोमैग्नन मानव (Cromagnon Man) :-

क्रोमैग्नन मानव उतरी पेलियोलिथिक संस्कृति का प्रतिक हैं इस मानव के अवशेष 1868 ई० में फ्रास के डोडोन प्रान्त की क्रोमैग्नन चटटानों से प्राप्त हुए।

क्रोमैग्नन मानव के जीवाश्मों की खोपड़ियॅ मानव के विकसित शरी की सूचक है।

इनका कपाल लम्बातथा भारी था। चेहरे में हडडी का विकास हो चुका था। दॉत आधुनिक मानव की तरह थे। इनका चेहरा चपटा तथा नाक लम्बी थी। इनकी ऊँचाई साढ़े पॉच फीट से साढ़े छह फभ्ट के लगभग थी। इन अवशेषों के निकट ही अनेक प्रकार के पाषाण औजार तथा हाथी दॉत से निर्मित वस्तुएँ प्राप्त हुई है।

यूरोज के अन्य भागयों में भी क्रोमैग्नन के अवशेष मिले हैं क्रोमैग्नन प्रजाति मानव की एक विकसित प्रजातिथी। ये गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी भी करते थे तथा हडिडयो पर भी कलाकृति बनाते थे।

(4) आधुनिक मानव (Modern Man) :-

आधुनिक मानव पूर्णतया सीधाा खड़ा होकर चलता था, उसकी कापालिक क्षमता अधिक ललाट सीधा व तना हुआ, जबड़ा एवं दॉत छोटे थे। उनकी बुद्धि अपने पूर्वजों से अधिक, बात करना, औजारों का निर्माण करना, समूह परिवार एवं समाज का निर्माण करना, समूह परिवार एवं समाज का निर्माण करना इत्यादि इनकी विशेषताॅए थी। फल-फॅल, पशु इत्यादि इनके भोजन थे।

आधुनिक मानव का उत्पति स्थल एशिया में केस्पियन सागर से लेकर भारत तक फैला माना जाता है। अनुकूलतम भोतिक परिवेश के कारण ही इस क्षेत्र में आधुनिक मानव अस्तिव्त में आया। स्थलखण्ड की क्रमबदृता के कारण वह आसानी से विचरण कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता हुआ स्थायी रूप से निवास करता था। स्थानांतरणशीलता के कारण उसमें परिवर्तन आते गये। आधुनिक मानव होमोसेपियन मानव की संतान हैं होमोसेपियन की मुख्य पॉच प्रजातियॅ हैं। - आस्ट्रेलाइड, मंगोलायड, काकेसाइड, निग्रायड तथा केपाइड (बुशमैन)।

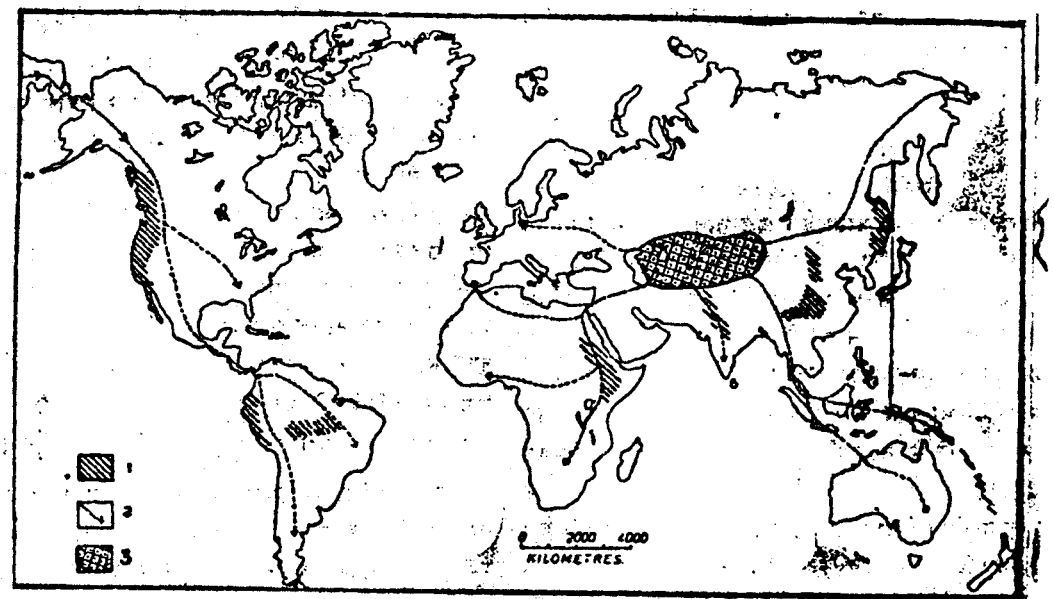

चित्र 2.5 आदि मानव का निवास स्थल (Cradle of Mankind) एवं प्रव्रजन के प्रमुख मार्ग
1. बहु प्रजातीय क्षेत्र, 2. प्रव्रजन के मार्ग, 3. आदि मानव का निवास क्षेत्र

पृथ्वीतल पर मानव का उद्‌भव एवं प्रसार :-

पृथ्वीतल पर मानव का प्रसार आधुनिक मानव की उत्पति स्थल से लगाया जाता हैं आधुनिक मानव की उत्पति कैस्पियन सागर के समीप मध्य एशिया में मानी जाती है जिसको 'मानव का पालना' कहा जाता है। यही से मानव का प्रसार अनेक शाखाओं में हुआ।

उद्‌भव क्षेत्र से विश्व के विविध क्षेत्रों में मानव प्रसार का यह प्रथम चरण माना जाता हैं इस प्रसार का प्रमुख कारण मध्य एशिया की जलवायु की शुष्कता बताई जाती हैं जिसके कारण आदि मानव को अपने गृह क्षेत्र में भोजन की कमी हुई और फलस्वरूप भोजन की खोज में ही मानव अन्यत्र स्थानान्तरित होता गया। इस स्थानान्तरण के फलस्वरूप जहॉ अनुकूलतम परिस्थितियॉ प्राप्त हुई, उस क्षेत्र का मानव समाज नई संस्कृति को विकसित करने में सफल हुआ। नदी घाटियॉ विशेषकर अधिक प्रभावशाली स्थल प्रमाणित हुई, क्योकि यहॉ मानव बसाव हेतु अनुकूल दशाएँ मौजूद थी पृथ्वी तल पर मानव के उदभव क्षेत्र से अनेक शाखाओं में प्रसार को त्रि संख्या 2.5 में दर्शाया गया है। धीरे धीरे इसी तरह सभी महाद्वीपों एवं दक्षिण पूर्वी एशिया के प्रमुख द्वीपों पर मानव का प्रसार होता गया।

2.6 निष्कर्ष (Summing-up)

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि मानव की उत्पति प्रारंम्भ से ही चिन्तन का विषय रही है। आरंभ में मानव की उत्पति एवं विकास से सम्बन्धित विचार धारा धार्मिक विश्वासों एवं मान्यताओ पर आधारित थे, जिनका वैज्ञानिक तथ्य नहीं मिल सका, फलस्वरूप इन्हें स्वीकृति नहीं मिल पाई।

चार्ल्स डर्विन के उदविकासीय सिद्धान्त को ही अनेक विद्धानों ने स्वीकारा, क्योकि इनके द्धारा प्रतिपादित रूपान्तरण का अनुकूलन का, प्राकृतिक चयन का सिद्धान्त ही सभी जीवों पर लागू होता है।

मानव उदविकास की व्याख्या करने का प्रयास विभिन्न मानवशास्त्रियों एवं मानव भूगोलवेताओं ने किया है। विभिन्न व्याखायाओं के मतानुसार माना जाता है कि सर्वप्रथम एक कोशिकी य प्राणियों का उद्भव आर्कियोजोइक महाकल्प में हुआ। पेल्थोजोइक महाकल्प के विभिन्न चरणों मेंमछलियॉ, उभयचर प्राणियों एवं सरीस्तपों का विकास हुआ। मेसोजोइक महाकल्प में विशाल डायनासोरों का उदभव हुआ। इसी समय प्रथम स्तनपाई एवं पक्षियों का भी उदभव हुआ। सेनोजोइक महाकल्प के ओलिगोसीन युग में आधुनिक मानव स्तन्य प्राणियों एवं प्राइमेटों का विकास हुआ अपने उदभव से आज तक भिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियॉ में स्वयं को दालते हुए मानव, वर्तमान मानव के रूप में आ चुका है, ये परिवर्तन विभिन्न सोपानों से होकर गुजरे है। वर्तमान मानव आधुनिक मेधावी मानव का ही वंशज हैं वर्तमान मानव जिस प्रकास से शरीर के भिन्न अंगों को प्रयोग में ला रहा है, उसी प्रकार से भविष्य में और भी परिवर्तन होने की संभावना है।

2.7 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)

1. **डार्विन का सिद्धान्त** :- डार्विन ने मानव की उत्पति के सम्बन्ध में जाति एवं वर्ग के विकास को स्पष्ट करते हुए तीन सिद्धान्त प्रतिपादित किये

(i) **रूपान्तरण का सिद्धान्त** :- प्रत्येक तत्व का रूप अनेक दिशाओं में परिवर्तित होता रहता हैं रूपान्तरण की दिशाएँ होने के कारण पविर्तित रूप भी विभिन्न प्रकार के होते है।

(ii) **अनुकूलन का सिद्धान्त** :- इस प्रक्रिया में कुछ रूपों में अपने पर्यावरण में जीवित रह सकने की क्षमता अन्य जीवों की अपेक्षा अधिक होती है, तथा

(iii) **प्राकृतिक चयन का सिद्धान्त** :- जिन जीवों में अनुकूलन की क्षमता हेती है वे जीवित रहते है, शेष नष्ट हो जाते है। जिनमें जीवन शक्ति अधिक होती है, प्रकृति उन्हीं को जीवित रखती है।

2. जैव पदानुक्रम :- जैव पदानुक्रम वह पदानुक्रम प्रणाली है जिसके अन्तर्गत मनुष्य, पशु, वनस्पति आदिक को एक क्रम में रखा जाता है।

3. प्रजाति :- प्रजाति का अर्थ मानव वर्ग से हैं जिसमें सभी मनुष्यों की शारीरिक रचना के बाहरी लक्षण कद, त्वचा का रंग, सिर की नाप, ऑख की आकृति, नाक की बनावट रंग इत्यादि समान हो तथा उनके रक्त वर्ण भी एक जैसे हों।

4. टांग शिशु :- आस्ट्रेलोपिथक्स मानव जीवाश्म की प्राप्ति अफ्रीका में टॉग नामक चूना पत्थर की गुफा में हुई थी। अतः इसे 'टांग शिशु' के नाम से भी जाना जाता हैं।

2.8 अभ्सार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

1. मानव की उत्पत्ति कैसे हुई, विस्तार पूर्वक समझाकर बतावें।
2. मानव की उत्पत्ति पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।

2.9 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. माजिद हुसैन	:	मानव भूगोल
2. बी० एन० सिंह	:	मानव भूगोल
3. श्री वास्तव एवं राव	:	मानव भूगोल
4. डा० चतुर्भुज मामोरिया	:	मानव भूगोल
5. एस०डी० कौशि	:	मानव तथा आर्थिक भूगोल
6. H.R. Singh	:	Fundamentals of Human Grography.
7. Fellnuen	:	Human Geography.

●●●

मानव का सांस्कृतिक अभ्युदय
(Cultural Evolution of Man)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

3.0 उद्देश्य (Objective)

3.1 परिचय (Introduction)

मानव का सांस्कृतिक विकास (Evolution of Human Culture)

3.2 सांस्कृतिक विकास के चरण (Steps of Cultural Development)

3.3 आधुनिक संस्कृति (Modern Culture)

3.4 निष्कर्ष (Summing up)

3.5 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)

3.6 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

3.7 प्रस्तावित पाठ (Suggested Reading)

3.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य छात्रों को मानवीय संस्कृति के अभ्युदय के बारे में बताना है। इस अध्ययन के पश्चात् आप जान सकेंगे :-

मानव के संस्कृति विकास को

मानव के संस्कृति विकास के चरणों को एवं

विभिन्न चरणों की सांस्कृतिक विशेषताओं को।

3.1 परिचय (Introduction)

शारीरिक आधार पर मानव एवं पशुओं के बीच अनेक समानताएँ हैं, परन्तु संस्कृति ही वह महत्वपूर्ण विशेषता है जिसने मानव को पशुओं से पूर्णतः पृथक् कर दिया है। मानव ने अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बहुत सी भौतिक वस्तुओं का आविष्कार किया, नई प्रविधियों की खोज की भाषाएँ विकसित की, अनेक विश्वास एवं नियम विकसित किए। मानव व्यवहार की इस संपूर्णता को ही 'संस्कृति' कहते हैं। संस्कृति परिवर्तनशील होती है। यह पुश्त-दर-पुश्त हस्तांतरित होती है। परन्तु जैविक क्रियाओं द्वारा नहीं वरन् समाज में रहकर मनुष्य उसे सीखता है और आवश्यकतानुसार उसमें संशोधन भी करता है या नये तथ्यों को जोड़ता है।

इस प्रकार आज जिस रूप में हम संस्कृति को देखते हैं वह कई सोपानों से होकर गुजरी है एवं परिष्कृत हे। परिष्करण की यही प्रक्रिया उद्विकास है। संस्कृति का यह विकास मानव के विकास के साथ ही हुआ है। जिस प्रकार मानव प्राइमेट से दूरेक्लस और इरेक्टस से होमोसेपियन्स हुआ, उसी प्रकार संस्कृति भी सरल एवं निम्न से जटिल एवं उच्चतर होती गई।

3.2 मानव का सांस्कृतिक विकास (Cultural Evolution of Man)

मानव के सांस्कृतिक विकास की कहानी अत्यधिक रोचक है। वह नई तथ्यों, सोपानों से होकर गुजरी है। सांस्कृतिक उद्विकास की जानकारी हमें विभिन्न तत्वों से प्राप्त होती है।

पुरातत्त्व विज्ञान

प्रजाति शास्त्र

जनजातीय अध्ययन इत्यादि।

इन तथ्यों की सहायता से हमें मानव उद्भव के प्रारंभ से अब तक की विभिन्न संस्कृति स्वरूपों की जानकारियाँ वर्त्तमान समय तक अनेक संस्कृतिक लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं। सांस्कृतिक लक्षणों के आधार पर मानव सांस्कृतिक उद्विकास को निम्न वर्गों में बाँटा जा सकता है।

1. आग पर नियंत्रण से पूर्व का मनुष्य-पूर्व-पाषाण युगीन संस्कृति।
2. शिकारी संस्कृति-पाषाण युगीन संस्कृति।
3. जीवन निर्वाह-कृषि आधारित संस्कृति।
4. औद्योगिक संस्कृति।
5. तकनीकी विकसित देशों की महानगरीय संस्कृति।
6. सूचना क्रांति पर आधारित आधुनिक संस्कृति।

* सांस्कृतिक विकास के चरण (Steps of Cultural Evolution)

मानव का सांस्कृतिक उद्विकास कई चरणों से होकर गुजरा है। सुविधानुसार इसे मुख्यतः तीन भागों में बाँटकर अध्ययन किया जाता है।

प्राचीन संस्कृति,

मध्ययगीन संस्कृति एवं

नवीन युगीन संस्कृति।

(1) प्राचीन संस्कृति :- अध्ययन की सुविधानुसार इसे पुनः सात उपवर्गों में विभाजित कर अध्ययन किया जाता है। प्राचीन संस्कृति के सात उपवर्ग-

(i) अति पुरा-पाषाण काल-गुफा में रहने की पूर्व की स्थिति को अति पूरा-पाषाण काल कहा जाता है। इस समय मानव पहाड़ी ढालों पर झुण्ड बनाकर रहते थे तथा खाद्य पदार्थों के रूप फल-मूल खाकर रहते थे।

(ii) पुरा-पाषाण युग–इस समय के मानव को आग जलाना आता था। ये मानव कई प्रकार के अस्त्रों का निर्माण एवं प्रयोग (चौपड़, कुल्हाड़ी) अपने उदर पूर्ति हेतु करते थे। चित्रकारी तथा मूर्त्तियों का भी निर्माण करते थे।

(iii) मध्य-पाषाण काल–इस युग में मनुष्य का स्थानांतरण हुआ था। इस युग में मानव पके हुए भोजन का सेवन करता था तथा भोजन को बर्तन में रखने की परंपरा थी। शिकार हेतु मानव इधर-उधर जाने लगा था।

(iv) नव-पाषाण युगीन संस्कृति–इसी युग में शिकारी जीवन की समाप्ति तथा कृषि कार्य का प्रारम्भ हुआ था। कृषि कार्य के साथ-साथ पशुपालन भी प्रारंभ किया गया था। इसी युग में तीर-धनुष का प्रयोग, सूर्य की पूजा, मृत आत्मा की पूजा इत्यादि का भी आरंभ हुआ था।

(v) कांस्य युग–इस समय धातुओं के प्रयोग का प्रचलन आरंभ हुआ। धातुओं में ताँबा तथा टिन का प्रयोग किया जाने लगा।

(vi) लौह-युगीन–इस युग में नगरों का विकास प्रारम्भ हो गया था। यह समय नगरीय क्रांति का प्रथम चरण था। इस समय नियोजित बस्ती बसाई गई थी। नदी के द्वारा व्यापार का कार्य आरंभ हुआ। इस समय की संस्कृति उच्च थी, क्योंकि कृषि नगर, आभूषण, औजार इत्यादि के प्रमाण पाये गये हैं।

(vii) भूमध्यसागरीय संस्कृति–भूमध्यसागर क्षेत्र में कृषि, वाणिज्य, व्यापार, कृषि इत्यादि का विकास हुआ। नगर एवं राज्य विकास के भी प्रमाण पाये जाते हैं। भूमध्यसागरीय संस्कृति प्राचीन संस्कृति विकास की उच्च अवस्था मानी जाती है।

(2) मध्ययुगीन संस्कृति :– अध्ययन की सुविधानुसाार इसे भी तीन उपवर्गों में विभाजित किया गया है।

(i) अंधयुग की संस्कृति–इस समय में मानव मुख्य रूप से कृषक था। कृषि के साथ-साथ वह लकड़ी काला एवं मछली पकड़ना भी जानता था। ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास इसी समय हुआ था।

(ii) अरब संस्कृति–छठी से चौदहवीं सदी के बीच मध्यपूर्व क्षेत्रों में अरबी संस्कृति का विकास हुआ। अरबी संस्कृति ने विश्व संस्कृति को प्रभावित किया था। इसी क्षेत्र में खगोल विथा, मानचित्र कला, गृह-निर्माण कला तथा अनेक आविष्कार भी हुए। मरूधान में स्थायी बस्ती विशिष्ट भाषा, विशिष्ट पहनावा आदि का विकास हुआ।

(iii) औपनिवेशिक संस्कृति–इसी समय प० गोलार्द्ध के अधिकतर क्षेत्र एवं तीनों महासागरों के द्वीपों का पता चला था। इस युग में वैज्ञानिक चिंतन का आरंभ हुआ था। खोज अभियान के दौरान यूरोपीय लोगों ने अपने व्यापार को बढ़ाया, धीरे-धीरे अपने प्रशासन को भी बढ़ाया। जिससे औपनिवेशिक संस्कृति का विस्तार होते गया। ईसाई धर्म का प्रचार व्यापक तौर पर हुआ। लंबे समुद्री मार्ग खुलने से समुद्री व्यापार का आरंभ हुआ। यूरोप के देशों